SJIF Impact Factor - 5.54

E- ISSN 2582-5429

AKSHARA

Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

July 2021 Special Issue 02 Vol. III

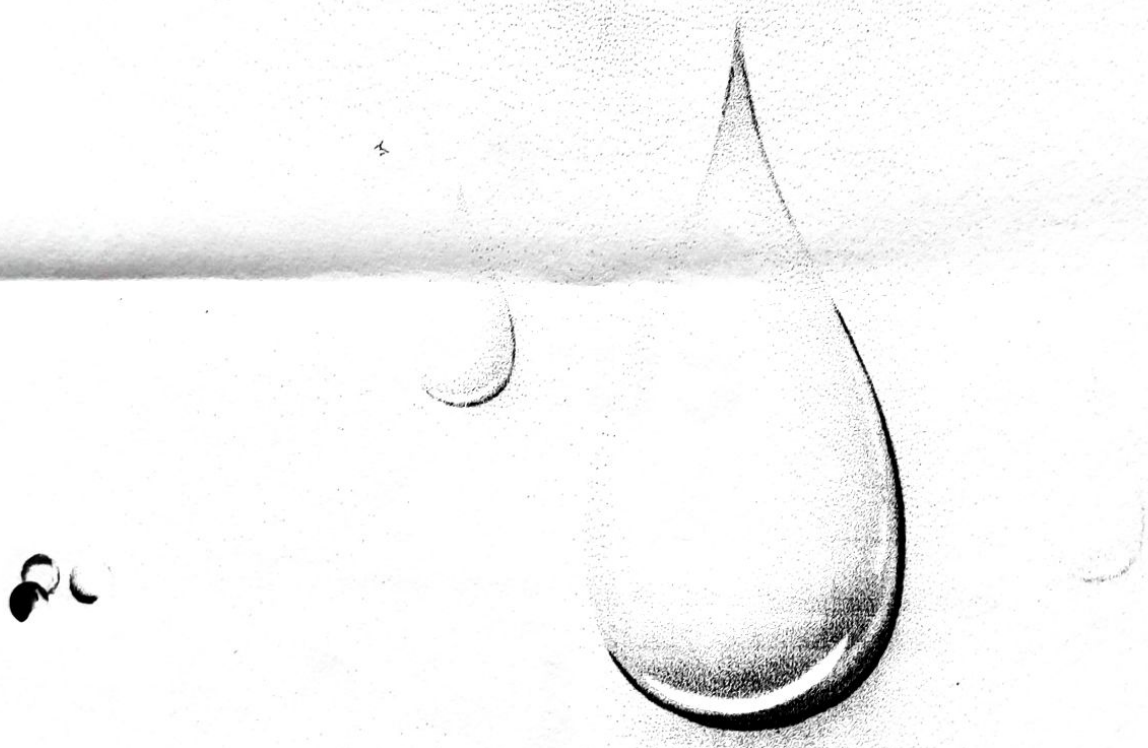

Chief Editor : Dr. Girish S. Koli, AMRJ
For Details Visit To - www.aimrj.com

Akshara Publication

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

July 2021

Special Issue 02 Vol.III

Scientific Journal of Impact Factor (SJIF) Impact-5.54

Scientific Journal Impact Factor

TOGETHER WE REACH THE GOAL

International Impact Factor Services

iifs

International Society for Research Activity (ISRA)
Journal-Impact-Factor (JIF)

ISRA JIF

Digital Online Identifier-
Database System

Akshara Publication
Plot No 143 Professors colony,
Near Biyani School, Jamner Road, Bhusawal Dist Jalgaon Maharashtra 425201

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
July 2021 Special Issue 02 Vol. III
SJIF Impact- 5.54

Index

Sr.No	*Title of the Paper* & Author's Name	Pg.No
1	The Issue of Gender in Indian Literature-**U.T. Mahamadxodjaeva**	06-08
2	The matic Exploration of Rohinton Mistry works-**Gajanan N Janakwade**	09-13
3	An Empirical study of E-banking among the non professional student of Jalgaon City - **Dr. Pavitra Devidas Patil**	14-19
4	Social Exclusion of Scavengers in Mumbai - **Dr. Sonali Mandar Hajare**	20-23
5	Cognitive constructivism in education: the process of knowledge building- **Smt. Vaishali O. Shelar**	24-29
6	Effect of Working Mother on Child Socialization: An Sociological Analysis **Lovely / Dr. Ajit Singh Tomar**	30-34
7	The Noun Paradigms in Tamil- **Mrs. Kamola Ergasheva**	35-39
8	Flipped Classroom Innovative Instructional Strategy for Quality Enhancement of Teaching Practices - **Ms. Sadiya M. Farooque / Dr. Hemant D. Chitte**	40-45
9	The effective use of creative teaching strategies in Education for well orgaized and motivated classroom Environment- **Mr. Manohar Dilip Dalavi**	46-49

हिंदी विभाग

Sr.No	*Title of the Paper* & Author's Name	Pg.No
10	राग दरबारी' स्वातंत्र्योत्तर भारतीय ग्रामीण जीवन का जीवंत दस्तावेज- **डॉ. जिन्दर सिंह मुण्डा**	50-54
11	व्यावहारिक अनुवाद मे चुनौतियाँ- **अंचल सक्सेना / हृदयनारायन दुबे**	55-57
12	स्त्री विमर्श की सांस्कृतिक चुनौतियाँ-**अमन कुमार**	58-62
13	उपन्यासकार रामकरण शर्मा का संस्कृत साहित्य में अवदान ('सीमा' उपन्यास के परिप्रेक्ष्य में) **- डॉ. प्रीति श्रीवास्तव**	63-67
14	यशपाल कृत 'दिव्या' उपन्यास में नारी अस्मिता और जिजीविषा- **डॉ. संतोष कुमार अहिरवार**	68-71
15	हिन्दी कथा-साहित्य में किन्नर विमर्श- **डॉ. रमा विनोद सिंह**	72-75
16	'बातन की ठाठ' कहानी के सवाल- **भरत**	76-78
17	दलित कहानियों का भाषिक विश्लेषण: वस्तु और भाषा के स्तर पर- **नम्रता सिंह**	79-82
18	मैत्रेयी पुष्पा के 'चाक' उपन्यास में नारी चेतना- **प्रा. डॉ. राजेंद्र काशिनाथ बाविस्कर**	83-85
19	सकल भारतीय साहित्य एक है - **मरीना एक्का**	86-88
20	'झीनी-झीनी बीनी चदरिया' में चित्रित बुनकर समाज का यथार्थ- **शेख उस्मान सत्तारमियाँ**	89-91
21	कृष्णा सोबती के उपन्यासों में नारी विमर्श-**डॉ. राखी. के. शाह**	92-95
22	गांधीजी के ग्रामोन्नति विचारों का समकालीन हिंदी साहित्य पर प्रभाव-**डॉ.चित्रा मिलिंद गोस्वामी**	96-98
23	डॉ. नरेंद्र मोहन की नाट्य-साधना-**डॉ.बाबासाहेब गव्हाणे**	99-106
24	सूर्यबाला के उपन्यासों में चित्रित सामाजिक समस्याएँ- **अस्मिता भगवान पाटील / डॉ. संगीता सूर्यकांत चित्रकोर्ट**	107-113
25	डॉ. रामकुमार वर्मा के नाटकों में बौध्दविचारों से प्रभावित स्त्री चरित्र - **सौ. गायकवाड शितल अंकुश / प्रा. डॉ. कल्लशेट्टी एम.के.**	114-115
26	सिरमौर जनपद के वैवाहिक लोकगीत- **डॉ. नरेश कुमार**	116-119
27	हिंदी भाषा शिक्षण एवं साहित्य सर्जना पर कोविड-19 का प्रभाव-**डॉ. अरुण घोगरे**	120-122
28	हिन्दी साहित्य में आदिवासी विमर्श ('धार' उपन्यास के संदर्भ में)- **प्रा. डॉ. भारती बी. वळवी**	123-126

E- ISSN 2582-5429
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
July 2021 Special Issue 02 Vol. III SJIF Impact- 5.54

24

सूर्यबाला के उपन्यासों में चित्रित सामाजिक समस्याएँ

अस्मिता भगवान पाटील
शोधार्थी
फोन नंबर - 9022995388
ईमेल - patilasmita073@gmail.com

डॉ. संगीता सूर्यकांत चित्रकोटे
मार्गदर्शक
फोन नंबर- 9421905599
ईमेल-sangitachitrakoti@gmail.com

सामाजिक समस्याएँ समाज के विकास को आघात पहुँचाने वाली परिस्थितियाँ होती है। वर्तमान समय में भारतीय समाज अनेक सामाजिक समस्याओं से पीड़ित है जिनके लिए राज्य तथा समाज द्वारा मिलकर प्रयास किए जा रहे हैं। मानव समाज न तो कभी सामाजिक समस्याओं से पूर्ण मुक्त रहा है और नहीं भविष्य में रहने की संभावना है। परंतु आधुनिक समय मेंविद्यमान संचार क्रांति और शिक्षा के प्रति लोगों में जागरूकता के कारण मनुष्य सामाजिक समस्याओं के प्रति सजग हो गया है। लेकिन समस्या विहीन समाज की कल्पना करना असंभव प्रतीत होता है।

सामाजिक समस्याएँ सामाजिक व्यवस्था में विघटन पैदा करती हैं जिससे समाज के अस्तित्व को खतरा पैदा होता है। लुंड्बर्ग के अनुसार, " सामाजिक समस्या अस्वीकृत दिशा में उस अंश तक विचलित व्यवहार है कि यह समुदाय की सहनशीलता सीमा को लाँघ जाता है।"[1] अर्थात सामाजिक समस्या ऐसी दशाएँ है जिन्हें समाज अपने स्थापित प्रतिमानों के लिए आघात समझता है। इसलिए उसे दूर करने की आवश्यकता होती हैं। सामाजिक समस्याएँ असंतोष, दुःख एवं कष्ट को उत्पन्न करती हैं।

मनुष्य सामाजिक तथा समाजशील प्राणी है। इसलिए वह समाज में रहता है। समाज में रहते समय वह विविध कार्य करता है। अपने कार्यों की पूर्ति करते समय उसे कुछ सामाजिक नियमों का भी पालन करना पड़ता हैतथा कभी कुछ समस्याओं से भी जूझना होता है। यह व्यक्तिगत समस्या जब संपूर्ण समाज को प्रभावित करती हैं तब वह सामूहिक समस्या बन जाती हैं। इसलिए डब्ल्यू वेलेसवीर ने कहा है- "सामाजिक समस्या एक ऐसी दशा है जो चिंता, तनाव, संघर्ष अथवा कुंठा को जन्म देती हैं और आवश्यकता पूर्ति में अवरोध उत्पन्न करती हैं।"[2]

जिस प्रकार एक व्यक्ति समाज में रहते हुए समस्याओं से जूझता है उसी प्रकार साहित्यकार भी इस समस्याओं का अनुभव करते हुए उसे लिखित रूप प्रदान करता है। सूर्यबाला एक संवेदनशील और यथार्थवादी साहित्यकार होने के कारण उन्होंने साहित्य के द्वारा कई समस्याओं का चित्रण करते हुए उसका समाधान भी प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। सूर्यबाला जी ने जिस मध्यवर्गीय समाज जीवन के दर्द और पीड़ा को देखा, समझा उसे अपने साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत किया। उसमें कोई काल्पनिक अतिरंजितता नहीं है बल्कि यथार्थ को वाणी देने का प्रयास किया है। सूर्यबाला के उपन्यासों में चित्रित समस्याओं का चित्रण यथार्थ है।जो निम्नानुसार है-

1. गरीबी की समस्या –

हमारे समाज में गरीबी एक ऐसी समस्या है , जो पूरे जीवन को प्रभावित करने का कार्य करती हैगरीबी याने किसी भी व्यक्ति की अत्याधिक निर्धन होने की स्थिति है। यह ऐसी स्थिति है जब एक व्यक्ति रोटी , कपड़ा और मकान जैसी सामान्य जरूरतों को भी पूरा नहीं कर पाता। सूर्यबालाजी ने 'सुबह के इंतजार तक', 'दीक्षांत','मेरे संधि पत्र'और 'अग्निपंखी' उपन्यासों में इस समस्या का यथार्थ चित्रण किया है।

'सुबह के इंतजार तक' इस उपन्यास में आर्थिक स्थिति से विपन्न परिवार का चित्रण मिलता है। उपन्यास की नायिका मानू बड़ी साहसी युवती है परंतु परिवार की आर्थिक स्थिति सामान्य होने के कारण उसका स्कूल जाना बंद हो जाता है। मानू का भाई बुलू भी पढ़ाई में बुद्धिमान है लेकिन परिवार की आर्थिक तंगहाली के कारण वह पढ़ाई छोड़कर एक गैरेज में काम करने लगताहै। उसके पिता जो काम मिलता है उसे कर लेते हैं तथा माँ भी नौकरी के लिए दर-दर की ठोकरें खाती हैं।परिवार की आर्थिक स्थिति का फायदा लेते हुए मानू की मामी उसे अपने घर लेकर जाती हैं। वह मानू के माता-पिता को मानू के शादी के बड़े-बड़े सपने दिखाती है , पर उसी के कारण मानू बलात्कार का शिकार होती हैं। इस घटना से सीख लेकर मानू तथा बुलू दूसरे शहर में जाकर सम्मान की जिंदगी जीने

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
July 2021 Special Issue 02 Vol. III SJIF Impact- 5.54

लगते हैं। इस सभी घटनाओं से ज्ञात होता है कि सूर्यबालाजी ने इस उपन्यास में गरीबी तथा उससे उत्पन्न होने वाली विभिन्न समस्याओं का चित्रण किया है।

'अग्निपंखी' नामक उपन्यास में गरीबी से जूझने वाले सामान्य परिवार का यथार्थ वर्णन किया है। जयशंकर गाँव का पढ़ा-लिखा युवक नौकरी के लिए शहर आता है। मेहनत से कमाई कर एक छोटी-सी कोठरी में रहने लगता है, बहुत संघर्ष करता है। लेकिन उसकी शादी होने के बाद उसे अनेक समस्याओं को झेलना पड़ता है। जयशंकर के विवाह के बाद मौजिद करके जब शहर आती है तो वहाँ अपने बेटे तथा बहू की स्थिति देखकर उसे बहुत दुःख होता है क्योंकि जयशंकर ने वास्तविक जिंदगी को अपने माँ तथा गाँव वालों से का छुपा कर रखी थी। अर्थात जयशंकर गरीबी के कारण परेशान था।

'मेरे संधिपत्र' नामक उपन्यास की नायिका शिवा सुसंस्कृत तथा पढ़ी-लिखी नारी है। उसके परिवार की स्थिति सामान्य होने के कारण पिता उसका विवाह एक अधेड़ उम्र के विधुर लखपति से करते हैं। शिवा कोदो सौतेली बेटियाँ भी विरासत में मिलती है। बाद में उसके पति का निधन हो जाता है। गरीबी के कारण ही शिवा के पिता उसकी शादी रायजादा से कर देते हैं। एक जगह खुद शिवा अपने घर की स्थिति के बारे में कहती है—"यही था मेरा अपना घर, छोटा सा कमरा, सहन, नल की टोटी से टपकता पानी, जिंस मसालों के कनस्तर ,डिब्बे मुसमुसे बिछावन, झूलते अधटंगे पर्दे। ऊंची

पतलून और अशक्त सी देहवाले पिताजी और अंगीठी के पास झुकी प्याले में मेरे ड्राइवर के लिए चाय ढालती अम्मा।.... सब कुछ कितना बोझिल, कितना असहनीय लगता।"[3] इससे शिवा के घर की गरीबी का चित्र हमारे सामने आता है।

'दीक्षांत' उपन्यास में विद्याभूषण शर्मा नामक एक अध्यापक के माध्यम से गरीबी की भयावह समस्या को दर्शाने का प्रयास किया है। शर्मा सर एक अच्छे खासे पढ़े-लिखे इंसान होने के बावजूद भी उन्हें अस्थाई नौकरी प्राप्त होती हैं। जिसके कारणवह व्याकुल होते हैं। अपने परिवार की सामान्य जरूरतों को पूरा करना भी उन्हें मुश्किल हो जाता है। एक समय वह अपने परिवार के बारे में सोचते हुए कहते हैं- "एक कप चाय रोज के हिसाब से महीने भर की चीनी, चाय और दूध ही जोड़ा जाए तो दस -पंद्रह रूपये महीने की बचत और दस-पंद्रह का मतलब है बांह पर मसके हुए ब्लाउज वाली कुंती के लिए एक नया ब्लाउज पीस, विनय के फैंटे स्कूल बैग की जगह एक नया सस्ता बैग या उनके कॉलेज जाने के टिफिन के लिए अल्युमिनियम के डिब्बे की जगह एक नया स्टील का डिब्बा।"[4] इससे परिवार की आर्थिक तंगी का सत्य उजागर होता है।

2. बेरोजगारी की समस्या –

बेरोजगारी की समस्या निर्धनता से संबंधित है क्योंकि समाज के लोग जब बेरोजगार रहते हैं तो वे निर्धन बन जाते हैं। मनुष्य को दैनंदिन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए रोजगार की काफी जरूरत होती है। अगर रोजगार उपलब्ध नहीं हुआ तो बेरोजगारी की समस्या उत्पन्न होती है। यह समस्या केवल दरिद्रता एवं दुखों को ही जन्म नहीं देती बल्कि सामाजिक संगठन में प्रतिकूल प्रभाव भी डालती हैं। विकासशील देशों में यह समस्या काफी मात्रा में दिखाई देती हैं। सूर्यबालाजी ने 'अग्निपंखी' तथा 'सुबह के इंतजार तक' उपन्यासों में बेरोजगारी की समस्या को बखूबी से दर्शाया है।

'अग्निपंखी' उपन्यास के द्वारा कथाकार सूर्यबालाजी ने एक अर्धशिक्षित बेरोजगार युवक जयशंकर के माध्यम से बेरोजगारी की समस्या का जीता-जागता चित्रण किया है। जयशंकर पढ़ा-लिखा होकर भी बेकार बना रहता है। जिसके कारण उसे घर तथा गाँव के लोग उसका मजाक उड़ाते हैं। जब अपने ही परिवार के लोग ताने देने लगते हैं तब उसका मन ऊब जाता है। मनोदशा अत्यंत खराब हो जाती है। आखिर वह शहर में नौकरी करने के लिए चला जाता है परंतु वहाँ की संघर्ष भरी जिंदगी से पिसता ही चला जाता है। जयशंकर को कुछ बातें मन ही मन सताई जा रही थी जैसे-" लेकिन भैया, इतना पढ़- लिख कर अगर मेहनत-मजदूरी ही करनी थी तो अपने खेत क्या बुरे थे। नहीं समझेंगे यह जाहिल कि अपने खेत अब बेगान हो गए हैं। शहर अब एक लाचारी है।"[5]इस तरह जयशंकर हमेशा के लिए शहर का निवासी बन कर दर-दर की ठोकरें खाता रहता है। इससे जयशंकर जैसे बेरोजगार युवक की भयानक वास्तविकता का परिचय हो जाता है।

सूर्यबालाजी ने'सुबह के इंतजार तक' इस उपन्यास के द्वारा भी बेरोजगारी की समस्या को उजागर करने का प्रयास किया है। मानू का परिवार साधारण है। वह अपने भरण-पोषण के लिए जो मिले वह काम करने तैयार रहते हैं। उसके पिता को कभी काम मिलता तो कभी आराम करते। इस के संदर्भ में वह खुद कहती है- "अपनी-याददाश्त में हमने कभी पिताजी को कोई नौकरी करते

E- ISSN 2582-5429
AIMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
July 2021 Special Issue 02 Vol. III SJIF Impact- 5.54

नहीं, बस लगातार दिन के दिन कड़ी धूप ,कड़ी ठंडक और बारिश में नौकरी तलाश करते हुए ही देखा है। कभी-कभी बीच में कुछ-कुछ महीनों की नौकरी लग जाती। कुछ दिन अपेक्षाकृत चैन से कटते, फिर वही पुरानी तलाश और दर-दर भटकने का सिलसिला शुरू हो जाता। फिर धीरे-धीरे अस्थाई नौकरियों के यह सिलसिले जुटने भी कम होने लगे।"पिताजी की स्थाई नौकरी तथा परिवार की आर्थिक तंगहाली के कारण खेलू पढ़ने- लिखने की आयु में मजबूर होकर एक गैरेज में काम करता है। मामू बलात्कार का शिकार होने के बावजूद भी जीवन के प्रत्येक संघर्ष को चुनौती के रूप मेंस्वीकार करती हैं। अर्थात बेरोजगारी के कारण ही मानू का परिवार भयंकर आर्थिक स्थिति से गुजरता है।

3. भ्रष्टाचार की समस्या –

वर्तमान युग में भ्रष्टाचार एक ऐसी समस्या है जो हमारे देश को दीमक की तरह खायी जा रही है। भ्रष्टाचार याने ' भ्रष्ट आचरण ' अर्थात अवैध तरीके से धन अर्जित करना। इसमें व्यक्ति अपने लाभ के लिए देश की संपत्ति का शोषण करता है। यह देश की उन्नति में सबसे बड़ा बाधक तत्व है। आज समाज में इसके विभिन्न रूप देखने को मिलते हैं। व्यक्ति की स्वार्थपरता के कारण भ्रष्टाचार काफी बढ़ रहा है। सूर्यबालाजी ने 'दीक्षांत' उपन्यास के द्वारा भ्रष्टाचार का वास्तविक चित्रण किया है।

शिक्षा के नाम पर चलने वाला भ्रष्टाचार 'दीक्षांत' उपन्यास का प्रमुख विषय हैविद्याभूषण शर्मा सर हिंदी के क्वालिफाइड अध्यापक है। लेकिन कॉलेज में सबके सामने उपेक्षा के पात्र बनकर रहते हैं। पी.एच.डी की उपाधि प्राप्त करने के बावजूद भी उन्हें कहीं स्थायी नौकरी नहीं मिलती। भ्रष्ट शिक्षा पद्धति के कारण हर कदम पर उन्हें अपमानित होना पड़ता है तथा महाविद्यालय के प्राचार्य भी राजनीति के चक्रव्यूह में पूरी तरह फँस जाते हैं। एक जगह वह खुद कहते भी हैं–"यह मेरे हाथ नहीं, मिस्टर शर्मा--- समूची मैनेजमेंट कमिटी का प्रेशर है---।"[7]

कॉलेज में प्राध्यापकों के पारस्परिक वैमनस्य और विद्यार्थियों की अनुशासनहीनता के कारण शर्मा सरतभी आदर्शवादी अध्यापक को आत्महत्या तक पहुँचना पड़ता है। उन्हें बदनाम करने के लिए अफवाहे भी फैलाई जाती हैं। जैसे शर्मा सर अफवाहों कोनकारते हुए कहते हैं-" सरासर गलत..... यह सब सिर्फ मुझे बदनाम करने के लिए किया जा रहा है.....जहाँ तक मैं जानता हूँ मेरे साथऐसी कोई वारदात नहीं हुई.....।"[8] सूर्यबालाजी ने इस उपन्यास में प्रारंभ से अंत तक भ्रष्टाचार का यथार्थ वर्णन किया है।

सूर्यबाला जी के अनुसार, "हर व्यक्ति समर्थ, ओजस्वी, तख्तापलट नहीं होता। कुछ बेहद शांत ,संकोची ,सात्विक और विनयी होते हैं। आज के अति भ्रष्ट माहौल में इनकी भौतिक उपलब्धि प्रायः शुन्य होती है। शर्मा सर की तरहा"[9]

4. अकेलेपन की समस्या –

आज हमारे समाज में अकेलेपन की समस्या ने सभी को प्रभावित किया है। अकेलापन जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप है परंतु दुर्भाग्यवश यह समस्या निरंतर बढ़ती ही जा रही हैं। इसमें जीवन के हर वर्ग के लोगशामिल है। अकेलेपन की त्रासदी भोगने वाले लोगों में मजबूर होकर अकेले रहने वाले व्यक्ति नहीं है बल्कि कोई व्यक्ति ऐसे भी है जो परिवार में रहते हुए भी खुद को अकेला महसूस करते हैंआज यह समस्या केवल भारतीय समाज की समस्या नहीं है,यह एक विश्वव्यापी समस्या बन गई है। यह आधुनिक जीवन की देन है। जिसमें समाज 'हम'से 'मैं' को प्रमुखता दे रहा है। भारत में संयुक्त परिवार के विघटन के कारण इस समस्या को बढ़ावा मिला है। आज यह समस्या एक मानसिक बीमारी बनती जा रही है। सूर्यबालाजी में 'यामिनी कथा' उपन्यास में यामिनी तथा पुतुल इन दो पत्रों के माध्यम से अकेलेपन की समस्या को बताने का प्रयास किया है।

'यामिनी कथा' उपन्यास में यामिनी और उसका बेटा पुतुल दोनों भी अकेलेपन की समस्या से जूझते हुए दिखाई देते हैं। प्रस्तुत उपन्यास की नायिका यामिनी की शादी मर्चेंट नेवी में नौकरी करने वाले विश्वास से होती है। परंतु विश्वास जहाजपर नौकरी करने के कारण उसके पास अपने परिवार के लिए ज्यादा समय नहीं देता तथा उनके घर आने-जाने का भी कोई निश्चित समय नहीं होता। जिसके कारण यामिनी अपने पति से बेहद प्यार करने के बावजूद भी अकेलेपन की अग्नि में जलती रहती है। अंत में जब कैंसर जैसी भयानक बीमारी के कारण विश्वास का निधन होता है तो वह अकेली ही जीवन संघर्ष का सामना करती हैं। एक जगह अपने मन की बेचैनी को व्यक्त करते समय यामिनी कहती है-" विश्वास की अस्वस्थता का लंबा दौर हमने इसी तरह काटा था एक- दूसरे के सहारे। और विश्वास की मृत्यु के बाद तो कितने खाली हो गए थे हम दोनों। तब मैं उसे एक मिनट भी अकेला न छोड़ती।"[10]

AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E- ISSN 2582-5429
July 2021 Special Issue 02 Vol. III
SJIF Impact- 5.54

जब यामिनी दूसरे पुरुष निखिल के साथ विवाह बद्ध होती हैं तभी वह पुतुल और पति निखिल के बीच उलझ ती रहती है। संतान और पति के बीच टूटती हुई यामिनी अकेली हो जाती है। तथा उसका बेटा भी पिता के निधन के बाद जब माँ दूसरी शादी करती है तो वह भी अकेला रह जाता है। जैसे-"पुतुल के किशोर मन में उस अति वत्सल पिता का अभाव पसरा पड़ा था।उसकी उदास,खाली-खाली दृष्टि हमेशा अतीत के ही इर्द-गिर्द फडफडती भटकती रहती। अब बहुत कोशिश करने पर जब कभी वह 'पापा' उच्चारता तो उसके थरथराते होठों पर थमे-थमे से वे शब्द जैसे चारों तरफ पसरे खालीपन को एक मौन हाहाकारसे भर देते। उसका चलना, खाना-पीना, कुछ कहना ,या कुछ भी न कहना- हर क्षण जैसे पिता की स्मृति को ही समर्पित रहता।"[11] ऐसे उदासी के क्षणों में उसका अकेलापन और अधिकता से स्पष्ट होता है। प्रस्तुत उपन्यास में माँ तथा बेटा पुतुल दोनों भी अकेलेपन की समस्या से जुझते हुए नजर आते हैं।

5. अनमेल विवाहकी समस्या –

अनमेल अथवा बेमेल विवाह हमारे समाज में मौजूद प्रमुख विकृति हैं। इस विवाह का सबसे बड़ा कारण हमारे समाज में व्याप्त कुरीतियाँ- दहेज तथा तिलक है। बेमेल विवाह में कभी उम्र तो कभी शारीरिक और मानसिक स्तर कीअसमानता रहती है। बेमेल विवाह की अंतिम परिणति अपूर्ण दांपत्य पीड़ा के रूप में होती हैं। भारतीय समाज में यह भयंकर सामाजिक समस्य है, जिसे सूर्यबाला जी ने 'मैरेसंधिपत्र ' उपन्यास में गंभीरता से उठाया है।

'मैरेसंधिपत्र ' उपन्यास की नायिका शिवा का विवाह रायजादा नामक एक प्रौढ़ व्यक्ति से होता है। वह व्यक्ति विधुर है , शिवा से उम्र में बड़े हैं तथा वे दो बेटियों के बाप भी हैं। शिवा के परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण वह जीवन से समझौता करती हैं। परंतु रायजादा साहब शिवा कोपैतीस की उम्र में ही छोड़ कर चले जाते हैं। अनमेल विवाह के कारण ही शिवा विधवा बन जाती है। जिसके कारण शिवा की आगे की जिंदगी कष्टमय बन जाती है।

शिवा के अनमेल विवाह के बावजूद भी उसका प्यार पाठकों को चकित कर देता है। इस के संदर्भ में जब सूर्यबाला जी से पूछा गया कि शिवा विद्रोह क्यों नहीं करती तो उन्होंने जो प्रतिक्रिया दी है वह यह है- "उपन्यास में शिवा की त्रासदी का कारण उम्र का अंतराल नहीं है, बल्कि अधेड़ पति का बौद्धिक और संवेदनात्मक स्तर पर शिवा से कमतर होना है।.... वह सौंदर्य भावना से हीन, हिसाबी - किताबी अवश्य हैं , लेकीन शिवा को पूरी ईमानदारी से प्यार करता है ,सुख -सुविधाएँ मुहैया कराता है। ऐसी स्थिति में विद्रोह आखिर कैसे किया जाए?और किसके प्रति? वह भी शिवा जैसी भावुक और संवेदनशील लड़की द्वारा, जिसके अभिभावक भी इस पति की उदारता और ईमानदारी के लिए कृतज्ञ है।" [12]

6. लिंग भेद की समस्या –

आज भी हमारे समाज में लड़का-लड़की में भेद किया जाता है। वास्तव में आज नारी पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर हर कार्य को सफलतापूर्वक करती है। फिर भी भारतीय समाज में बेटी के जन्म पर उदासी छा जाती है और बेटे के जन्म पर खुशियाँ मनाई जाती है। नारी पुरुषों के समकक्ष है फिर भी उसकी उपेक्षा की जाती है। इस संबंध में सूर्यबाला जी ने अपने उपन्यास 'मैरे संधीपत्र' में भारतीय जनमानस के मनोभावों को बताने का प्रयास किया है।

'मैरे संधिपत्र' उपन्यास की नायिका शिवा के पति रायजादा शिवा से बहुत खुश हैं। परंतु शिवा को जब तीसरी बेटी होती हैं तब वह बहुत नाराज होते हैं। क्योंकि पहले पत्नी से उन्हें दो बेटियाँ ही थी। रायजादा को अपनी जायदाद सँभालने के लिए लड़का चाहिए था। अपनी संपत्ति का कोई बारिश ना होने के कारण वे दु:खी रहते हैं। पर जब उनकी बेटी रुचा को पुत्र होता है तो अपनी खुशी जाहिर करते हुए कहते हैं- "जन्म भर तो अपने बेटे का इंतजार करता रहा , अब बेटी के बेटे पर ही सोचा है हौसला निकाल लू"[13] इससे साफ जाहिर होता है कि समाज में लड़का- लड़की में केवल भेद ही नहीं किया जाता बल्कि उसके बिना जीवन अधूरा ही समझा जाता है। इसी विचारधारा को बदलना काफी जरूरी है।

7. बलात्कार की समस्या–

बलात्कार एक घिनौना सामाजिक अपराध है। पुरुष की कामुकता के कारण नारी बलात्कार का शिकार होती है। इस समस्या के कारण नारी सदैव खुद को असुरक्षित समझती हैं। बलात्कार एक समाज को लगा हुआ कलंक है। पुरुष के वासना की शिकार बनी नारी को सामाजिक जीवन जीने में बाधा उत्पन्न होती है। उसका सारा जीवन ही निराशावादी बन जाता है। अर्थात मानसिक

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
July 2021 Special Issue 02 Vol. III SJIF Impact- 5.54

संतुलन खोने के कारण वह खुद को अपराधी मानने लगती हैंऐसे बलात्कार की समस्या को सूर्यबाला जी ने 'सुबह के इंतजार तक' इस उपन्यास में यथार्थ रूप से चित्रित किया है।

'सुबह के इंतजार तक' उपन्यास की नायिका मानू बलात्कार की शिकार होती हैं। अपनी आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण वह मामा- मामी के पास शहर रहने चली जाती हैं। किंतु एक दिनमामा - मामी के पश्चात मामा की कंपनी में काम करने वाला वर्कर कुछ घरेलू सामान देने के बहाने से घर में आकर मानू को अपनी वासना का शिकार बनाता है। इस घटना के कारण मानू कम उम्र में ही कुमारी माता बन जाती हैं और खुद को अपराधी माने लगती हैं। इसके संदर्भ में एक दिन वह अपने भाई बुलू से कहती हैं- "तुझे तो बस चिढ और गुस्सा ही आता है ना मुझ पर लेकिन मुझे तो नफरत और घिन सी आती है खुद पर। विश्वास करेगा ? तीन रातों को शिवाले वाले कुएँ तक चुपचाप भागती चली गई हू बदहवास.... पर कूदने से पहले डर लग गया,बुलू।....."[14]बलात्कार का शिकार हुई मानू को समाज में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है|आत्महत्या का विचार मन में आने के बाद भी वह आत्महत्या नहीं करती बल्कि दर-दर की ठोकरें खाती हुई वर्तमान के बीहड़ में भविष्य के लिए एक राह निकालने की कोशिश करती हैं। खुद ट्यूशन लेकर या शिक्षिका की नौकरी कर अपने भाई बुलू को पढ़ा-लिखा कर डॉक्टर बनाती है। अंत में कैंसर का शिकार होने के कारण उसकी मृत्यु हो जाती है। इस तरह मानू कठिन परिस्थितियों में जीवन यापन कर समाज के सामने आदर्श बन जाती है।

8. विधवा समस्या--

यह नारी जीवन की सबसे दु:खदायी घटना होती है, पति की मृत्यु के बाद उस महिला की हालात काफी चिंताजनक होती है। विधवाओं को अनेक कठिनाइयों और अभावों का सामना करना पड़ता है। समाज द्वारा उन पर अनेक पाबंदियाँ लगा दी जाती है। उन्हें अधिकारों से वंचित भीरखा जाता है। विधवाओं के साथ अछूत जैसा व्यवहार कर उनकी प्रताड़ना की जाती हैं। जिसके कारण विधवा नारी का जीवन बहुत कष्टमय होता हैस्त्री के इस अभिशप्त जीवन का करूण चित्रण सूर्यबाला जी ने 'मेरे संधिपत्र', 'अग्निपंखी', 'यामिनी' कथा इस उपन्यासों में किया है।

'अग्निपंखी' उपन्यास में सूर्यबाला जी ने विधवा नारी का जीवन संघर्ष चित्रित किया है। जयशंकर की माँ अपने पति का निधन होने के बाद भी अपने पुत्र को पढ़ाती हैं। उससे अफसर बनाना चाहती हैं। पति के निधन के बाद उसे ही अपना एकमात्र सहारा मानती है। शहर में उसके पास रहने चली जाती है। परंतु बेटे द्वाराउसे प्रताड़ित किया जाता है। माँ-बेटे में झगड़े हो जाते हैं। जैसेएक दिनजयशंकर अपनी पत्नी से कहता है- "ले जा इसे। डाल दे खटोली पर। मेरी आँखों से दूर कर, नहीं तो मैं हाथ चला बैठूंगा।"[15] इतना ही नहीं जब वह गाँव जाती है तो जेठ और देवर भी उसका अपमान करते है। घर की औरतें भी उससे झगड़ती हैं। जिसके कारण उसका मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है।

'यामिनी कथा 'सूर्यबाला जी का विधवा समस्या पर आधारित उपन्यास है। जिसमें विधवा नारी यामिनी के जीवन संघर्ष को चित्रित किया है। यामिनी का पहला विवाह विश्वास से होता है। वह मर्चेंट नेवी में नौकरी करता था। यामीनी उसे बहुत चाहती थी, लेकिन विश्वास सदैव उसकी उपेक्षा ही करता था। एक दिन कैंसर की बीमारी के कारण विश्वास का देहांत होता है। उसके बाद यामिनी अपने चौदह वर्षीय बेटे पुतुल के साथ जिंदगी जीने लगती है। आखिर दूसरे पुरुष निखिल से विवाह कर अपनी जिंदगी बसा लेती हैं। परंतु यामिनी पति तथा दो बेटों के बीच उलझ जाती हैं।

'मेरे संधिपत्र' इस उपन्यास में विधवा नारी शिवा के जीवन संघर्ष को बताया है। शिवा का विवाह अधेड़ उम्र के व्यक्ति रायजादा से होता है तथा उसे दो सौतेली बेटियाँ भी विरासत में मिलती है। शादी के बाद शिवा को भी एक लड़की होती हैं। लेकिन शादी के कुछ साल बाद ही पैतीसकी उम्र में शिवा विधवा बन जाती है। उसका पूरा जीवन ही बदल जाता है। ऐसी अवस्था में केवल आत्मविश्वास के बल पर अपने परिवार को सँभालने की कोशिश करती है। जब रत्नेश अंकल उसके सामने विवाहका प्रस्ताव रखते हैं तब बेटियाँ भी उसके प्रस्ताव को लेकर पुनर्विवाह की बात सोचती है । लेकिन शिवा अकेले जीवन यापन करना ही पसंद करती है। इस प्रकार विधवा नारी शिवा का अनोखा जीवन संघर्ष इस उपन्यास में है।

9.महानगरीय समस्या--

महानगरीकरण के कारण आजादी के बाद मानवीय जीवन में निरंतर परिवर्तन होता हुआ दिखाई देता है। स्वतंत्रता के पश्चात महानगर में हो रहे औद्योगिकरण के कारण महानगरीय जीवन समस्याग्रस्त बन गया है। जैसे गाँव के लोग रोजी-रोटी की तलाश में

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
July 2021 Special Issue 02 Vol. III
SJIF Impact- 5.54

शहर आए जिसके कारण जनसंख्या में वृद्धि हुई परंतु उतने अनुपात में मकानन होने से आवास की समस्या उत्पन्न हुई। इसका परिणाम यह हुआ कि लोग झोपड़पट्टी में रहने लगे फिर वहाँ गंदगी की समस्या बढी , प्रदूषण बढ़ गया । ऐसे ही दमघोटू वातावरण का जीवंत चित्रण सूर्य बालाजी ने अपने उपन्यास 'अग्निपंखी' में किया है।

'अग्निपंखी' की उपन्यास का जयशंकर पढ़ा-लिखा बेरोजगार युवक काम की तलाश में मुंबई जैसे महानगर में आता है। वॉचमैनी का काम कर झोपड़पट्टी में अपने पत्नी तथा माँ के साथ रहता है। वहाँ बहुत संघर्ष कर कैसे तो अपने परिवार को चलाने की कोशिश करता है| लेकिन गाँव के खुले परिवेश से शहर में रहने आई माँ शहरी वातावरण से उब जाती हैं| उसे जवान बेटे-बहु के साथ एक ही कमरे में रहना अच्छा नहीं लगता। ऐसेसमय वह कहती हैं-"दम घुटता- सा लगा। हे राम ! यहाँ कोठरी है या कबरगाह । जीते जी आदमी दफन हो जाए। उठकर हाथ - पैर सीधे करने ने तक की जगह नहीं।.... यही सब देखकर आँख मूँद लेने को जी चाहता था। कैसी बेहयाई - बेशरमी लगती थी। वही बेटा ,वही बहू ,वही माँ.....उसी में दुनिया के सारे धंधे सोचते भी पाप लगे। यह सब कुछ ऐसा कैसे हो गया ?"[16]इस तरह छोटे से मकान में रहने से मना कर जयशंकर की माँ फिर वापस अपने गाँव चली जाती हैं। गाँव जाने पर उसके जेठ और देवर उसकी कोठी पर कब्जा कर लेते हैं, पर उसके साथ ठीक से व्यवहार तक नहीं करते।
जयशंकर शहर में आर्थिक समस्या से भी जूझता हुआ दिखाई देता है। वह अपने लिए मनचाही चीजें भी खरीद नहीं सकता इस के संदर्भ में अपनी पत्नी से बड़बड़ाता हुआ कहता है-

"तीन महीने से अपने लिए जूता नहीं खरीद पाया।अभी लोकल का पास अलग बनवाना है। महीने के पूरे दस दिन का खर्चा पानी... पर इसे कौन समझाए।"[17] ऐसे विविध समस्याओं का यथार्थ चित्र अग्निपंखी में देखने को मिलता है।

10. गृह क्लेश या पारिवारिक कलहकी समस्या–

घर परिवार में कलह ,विवाद, लड़ाई, झगड़े का होना पारिवारिक कलह है। पारिवारिक कलह जीवन का सबसे बड़ा कष्ट होता है। सूर्यबालाजी ने 'अग्निपंखी' के उपन्यास के द्वारा जयशंकर के संयुक्त परिवार के कलह को सजीवता से वर्णित किया है। जयशंकर के पिता की मृत्यु होने के पश्चात अपनेपति की इच्छा पूरी करने के लिए जयशंकर की माँ जयशंकर को मेहनत से पढ़ाती हैं। परंतु जयशंकर के परिवार वाले इस बात को लेकर झगड़ते हैं जयशंकर परेशान होकर नौकरी के लिए शहर जाने का संकल्प करता है। शादी के बाद अपने माँ की जिद के कारण उसे भी शहर ले जाता है। परंतु जब वह फिर से गाँव लौटती है तो जेठ तथा देवर उसे भला - बुरा कह कर पुन: शहर जाने को कहते हैं। जमीन - जायदाद पर अपना अधिकार जमा लेते हैं। ऐसे समय जयशंकर का गुस्सा तेज होकर वह अपने चाचा से कहता है – "क्यों नहीं रह सकती ? घर सिर्फ आप ही लोगों का नहीं है। जमीन - जायदाद में मेरा भी तो हिस्सा है और ....और मैं अपने बाप का अकेला हूं।"[18] जय शंकर की विधवा माँ की परिवार में उपेक्षा होने लगती हैं| छोटको उसे कड़वे शब्द सुनाती हैं । घर में बार-बार विवाद होने लगते हैं। जिसके कारण संयुक्त परिवार विघटित हो जाता है।

निष्कर्ष–

डॉ.सूर्यबाला जी संवेदनशील साहित्यकार है । बीसवीं तथा इक्कीसवी सदी की स्त्री रचनाकारों में सूर्यबाला का साहित्य अद्वितीय है। उनका उपन्यास रचना संसार व्यापकता को दर्शाता है। उनके साहित्य का महत्वपूर्ण वैशिष्ट्य यह है कि उन्होंने अपनी सुक्ष्म दृष्टि के कारण जीवन के हर समस्या को समाहित करने का प्रयास किया है। अर्थात व्यक्ति मानस के बाहय जगत के साथ-साथ अंतर जगत की छवि का चित्रण भी उनमें मिलता है। सामाजिक समस्याओं का चित्रण करते समय उन्होंने गाँव तथा शहर दोनों को महत्व दिया है। सूर्यबाला के उपन्यास साहित्य में सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसमें विद्रोह कम और सामंजस्य ही अधिक दिखाई देता है । एक बार दूदर्शन पर हो रहे साक्षात्कार के दौरान स्वयं सूर्यबाला जी ने कहा था, "मेरे साहित्य में विद्रोह नहीं है विवेक हैं, मेरे पात्र गलत को सही नहीं बताते पर अपने स्टाइल से विरोध करते हैं।"[19]

सूर्यबाला जी ने अपने उपन्यास 'मेरे संधिपत्र' में अनमेल विवाह ,विधवा नारी की समस्या तथा लड़का लड़की में भेद आदि का वर्णन किया है।'सुबह के इंतजार तक' इस उपन्यास में मुख्यत: बलात्कार, गरीबी, बेरोजगारी की समस्याओं को प्रस्तुत किया है। 'अग्निपंखी' उपन्यास में विधवा नारी की समस्या ,गरीबी, बेरोजगारी,गृहकलह तथा महानगरीय समस्याओं का चित्रण किया है तथा 'दीक्षांत' नामक उपन्यास में भ्रष्टाचार, राजनीति का खोखलापन तथा गरीबी आदि समस्याओं को बताया है। निष्कर्षत: हम कह

सकते हैं कि सूर्यबालाजी ने समाज के सभी महत्वपूर्ण समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है।अर्थात उनका उपन्यास साहित्य कल्पना पर आधारित न होकर यथार्थ की ठोस भूमि पर अभिव्यक्ति पाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची—

1.विद्याभूषण डॉ.डी.आर. सचदेव - समाजशास्त्र के सिद्धांत, किताब महल इलाहाबाद, प्रथम संस्करण: 2002,पृ. सं.789
2. वही पृ. सं.790
3.वही पृ.सं.798
4. डॉ. रत्नमाला धारबा धुले- सूर्यबाला के कथा साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन, विकास प्रकाशन कानपुर ,प्रथम संस्करण 20014 ,पृ.सं. 152
5. वही पृ. सं. 163
6.वही पृ.सं.168
7.वही पृ.सं.170
8.वही पृ.सं.173
9.वही पृ.सं.174
10.वही पृ.सं.176
11.वही प.सं.179
12. डॉ.वसंतकुमार गणपत माली- सूर्यबाला के कथा साहित्य में युगबोध, विकास प्रकाशन कानपुर, प्रथम संस्करण: 2013 पृ.सं. 179
13.वही पृ.सं.180
14.वही पृ.सं.196
15.वही पृ.सं.197
16.वही पृ.सं.198
17.वही पृ.सं.199
18.वही पृ.सं.200
19.वही पृ.सं.201

■ ■ ■